DELHIIN/2007/20081 Date of Publication: 13/09/2019 G-3/DL(N)/202/2019-21

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–13 अंक–4 सितम्बर 2019 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

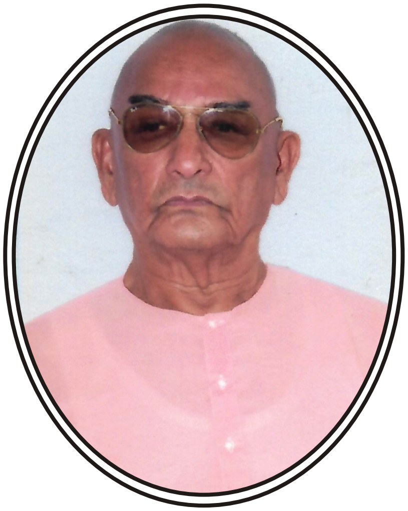

तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानंद जी

संस्थापकः

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल (रजि. सं. S/20762)

सत्संग भवन – सी॰एस॰/ओ॰सी॰एफ॰ नं॰ 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85
मो॰ : 9810344596, 011–27574151
ई–मेलः atmagyanp@gmail.co,
वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.org

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

इस अंक में प्रकाशितः–

1. अध्यात्म ज्ञान जगत् के मूल कारण परमात्मा को जानने का विज्ञान है।
2. रूहानी गुरू से मिलने का रास्ता पिण्ड से ब्रह्माण्ड की ओर जाता है।
3. अध्यात्म ज्ञान के बिना मानव जीवन सफल नहीं हो सकता है।
4. कर्मों की गति बड़ी गहन है इसे अध्यात्म ज्ञान से ही समझा जा सकता है।
5. परमात्मा की आत्माओं को परमात्मा का ज्ञान निशुल्क मिलता है।
6. अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग–1)

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः– चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.org है

सम्पादकीय

अध्यात्म ज्ञान जगत् के मूल कारण परमात्मा को जानने का विज्ञान है।

अध्यात्म ज्ञान एवं भौतिक विज्ञान दोनों ही अनुभव एवं प्रयोग पर आधारित ज्ञान हैं। ये दोनों ही प्रयोगात्मक रूप से करके देखने के विज्ञान हैं इन दोनों का उद्देश्य खोज करना है। परन्तु इन दोनों में समता होते हुए भी बहुत बड़ा अन्तर है। विज्ञान जड़ पदार्थ के विकास के लिए कार्य करता है जबकि अध्यात्म ज्ञान आत्मिक विकास के लिए कार्य करता है। विज्ञान जड़ जगत एवं पदार्थ पर आधारित ज्ञान है जो समय के अनुसार बदलता रहता है क्योंकि इस जड़ जगत में जब कोई खोज होती है तो कुछ समय बाद ही उस पर एक नयी खोज प्रारम्भ हो जाती है और पदार्थ के विकास के लिए एक नयी तकनीक ढूंढ़ ली जाती है जिससे लोग पुरानी वस्तुओं के स्थान पर नयी वस्तुओं का प्रयोग करने लगते हैं। जैसे आज के समय में लोग पुरानी वस्तुओं को छोड़ कम्प्यूटर तथा लैपटॉप के द्वारा अनेक मुश्किल कार्यों को सरल बना रहे हैं। इस प्रकार विज्ञान द्वारा की गयी खोज समय के अनुसार बदल जाती है परन्तु अध्यात्म ज्ञान आत्मिक विकास का परम विज्ञान है यह शाश्वत एवं सनातन है इसमें कभी भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है यह कभी समाप्त एवं धूमिल भी नहीं होता है। इस ज्ञान के द्वारा आत्मिक विकास के लिए साधना करनी पड़ती है इसका सिद्धान्त अटल है इससे आत्मिक विकास द्वारा अपने वास्तविक स्वरूप को जाना जा सकता है। यह जगत के मूल कारण परमात्मा को जानने का विज्ञान है। विज्ञान के सिद्धान्त देश, काल एवं स्थान के अनुरूप बदल जाते हैं। परन्तु अध्यात्म के सिद्धान्त अटल होते हैं। यह प्रकृति भी परमात्मा की एक शक्ति है जिसमें अनेक रहस्य छिपे पड़े हैं इन रहस्यों को उजागर करना विज्ञान के वश की बात नहीं है प्रकृति के स्थूल तत्वों को ही विज्ञान द्वारा विकसित किया जा सकता है। परन्तु प्रकृति के मूल में छिपे सत्–रज–तम गुणों को विज्ञान द्वारा विकसित नहीं किया जा सकता है। हम केवल प्रकृति के बाहरी स्वरूप को ही देख पाते हैं। उसके मूल को नहीं जैसे बाहरी जगत में पेड़ के पत्ते, फूल एवं फल ही दिखायी देते हैं उसकी मूल अर्थात् जड़ दिखायी नहीं देती है जो पेड़ का आधार है जिस पर सारा वृक्ष टिका हुआ है इसी प्रकार हम संसार को तो इन बाहरी आंखों से देख रहे हैं परन्तु इसके मूल कारण परमात्मा को नहीं देख पा रहे हैं, अध्यात्म ज्ञान के द्वारा प्रकृति के मूल स्वरूप, अपने वास्तविक स्वरूप एवं परमात्मा के परम स्वरूप को भी देखा जा सकता है। इसके लिए प्रकृति से परमात्मा तक की यात्रा करनी पड़ती है। यह प्रकृति एक परदा है जिसके पीछे परमात्मा छिपे है यह प्रकृति का परदा अध्यात्म ज्ञान से हटता है। अध्यात्म ज्ञान एक शाश्वत एवं सनातन ज्ञान है। जिसके द्वारा परमात्मा को खोजना ही तत्व ज्ञान है।

रूहानी गुरू से मिलने का रास्ता पिण्ड से ब्रह्माण्ड की ओर जाता है।

यह संसार एक चौराहा है। इस चौराहे पर आकर अनेक जीवात्माएं भटक जाती हैं क्योंकि सच्चे सन्त के बिना उन्हें सही रास्ता बताने वाला नहीं मिलता है। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करती हुई जीवात्मा को मनुष्य योनि में ही परमात्मा से मिलने का सुअवसर प्राप्त होता है। इस योनि में ही उसे तत्वदर्शी सन्त का सत्संग सुनने को मिलता है। सत्संग श्रवण करने के उपरान्त वह श्रद्धापूर्वक सच्चे सन्त से ज्ञान प्राप्त करती है। तब जीवात्मा को सुष्मना स्वर द्वारा पिण्ड से ब्रह्माण्ड की ओर जाने का रास्ता मिलता है। संसाररूपी चौराहे के अन्य सभी रास्ते बाहर संसार की ओर जाने वाले ही होते हैं। केवल सुष्मना द्वारा ही एक रास्ता पिण्ड से ब्रह्माण्ड की ओर जाने वाला होता है जिस पर चलकर जीवात्मा का अपने परमपिता से मिलन होता है और उसे अपने सच्चे घर जाकर पूर्ण शान्ति मिलती है। परमात्मा की रूहानी रोशनी ही परमात्मा का ज्ञान है। जिससे जुड़कर जीवात्मा का अज्ञान अन्धकार दूर होता है। केवल परमात्मा ही ज्ञेय अर्थात् जानने योग्य है जिसे जानकर अन्य कुछ जानना शेष नहीं रहता है। रूहानी रोशनी का एक मात्र स्रोत अविनाशी रूहानी गुरु की "रूह" है जैसे जल समुद्र का अंशी है तथा जल का एक मात्र स्रोत समुद्र है। समुद्र का जल भाप बनकर बादल का रूप धारण करता है जिसे हवा उड़ाकर जगह–जगह पृथ्वी पर वर्षा के रूप में वर्षाती है। इस वर्षा से पृथ्वी पर रहने वाले जीव प्राणियों के लिए अन्न तथा फल आदि की व्यवस्था होती है तथा सारी पृथ्वी पर हरियाली व खुशहाली छा जाती है। ठीक उसी प्रकार से रूहानी गुरु की रूहानी रोशनी से सभी जीवों के मुखमण्डल चमकते हुए दिखायी देते हैं। हमारी आंखों में जो रोशनी दिखायी देती है वह भी रूहानी रोशनी का ही प्रकाश है। इस प्रकार अध्यात्म एवं भौतिक जगत अर्थात् धर्मक्षेत्र तथा अधर्मक्षेत्र दोनों ही उसके प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं। आत्मा में स्थित अमृत, दया एवं निस्वार्थ प्रेम का वास्तविक स्रोत भी रूहानी गुरू की रूह ही है। जब साधक साधन करते–करते ज्ञान अवस्था को प्राप्त कर लेता है तब उसके अन्दर ब्रह्म वर्षा बरसने लगती है जिससे उसकी जीवन नगरी में अमृत दया एवं निस्वार्थ प्रेम अंकुरित हो जाते हैं उसके जीवन में अनेक अध्यात्मिक शक्तियाँ प्रकट हो जाती हैं।

जिन्हें साधक अपने अंदर प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करता है। अविनाशी रूहानी गुरू की रूह से अनेकों रूहें प्रकट हो रही हैं। योगी को अनेक मुक्त रूहानी रूह भी रूहानी जगत में भ्रमण करती हुई दिखायी देती है। जितने अनुभव योगी को प्रत्यक्ष होते हैं, उन सभी को व्यक्त करना अथवा लिखना सम्भव नहीं है। इसलिए मुख्य सार को ही ग्रहण कर लेना चाहिए। संसार के अन्य सभी रास्ते मानव को अधोगति की ओर ले जाने वाले होते हैं। इंग्ला–पिंग्ला स्वर में संसारिक कार्य ही सिद्ध होते हैं। मोक्ष मार्ग दायिनी कार्य इनमें सिद्ध नहीं होते, केवल पिण्ड से ब्रह्माण्ड की ओर जाने वाला मार्ग सुष्मना स्वर से ही खुलता है इस मार्ग पर चलकर ही मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। आज के युग में तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी ने 90 वर्ष की आयु में लगातार योग साधन करते हुए मोक्ष पद को प्राप्त किया है। अतः जो व्यक्ति मोक्ष पद को प्राप्त करना चाहता है वह तत्वदर्शी सन्त श्री परमचेतनानन्द जी की शरण में आकर पूर्ण श्रद्धा एवं सेवाभाव से उस अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त कर योग साधन में लग जाये और मानव जन्म के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर जीवन को सफल बनाये। इस ज्ञान के अलावा अन्य कोई रास्ता नहीं है जिस पर चलकर मोक्ष प्राप्त किया जा सके।

भजन

आज मेरे योग साधन में, एक खुशबु महक रही है।
ब्रह्म सागर से ब्रह्म वर्षा, मेरे अन्दर बरस रही है।।
श्वांस के अन्दर सोहं–सोहं, ध्वनि गरज रही है।
सावन जैसी बिजली, मेरे अन्दर चमक रही है।।
जीवन बाग की फुलवारी में, अमृत वर्षा बरस रही है।
परम पुरूष का दर्शन करने, सुरत हमारी तरस रही है।।
अनहद धुन में प्यारी प्यारी, बाँसुरी बाज रही है।
सुरत सुहागन गुरू प्रेम में, खुश हो नाच रही है।।
सत संगत में गुरू की कृपा, सब भक्तों पर बरस रही है।

अध्यात्म ज्ञान के बिना मानव जीवन सफल नहीं हो सकता है

जिस ज्ञान के द्वारा मानव जीवन सफल होता है वह निष्काम ज्ञान अध्यात्म ज्ञान है। मोह अन्धकार में भटके मानव को इस ज्ञान की परम आवश्यकता है। तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी ने लगातार 60 वर्षों तक योग साधन करते हुए इसी ज्ञान के आधार पर मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त किया है। आज उनकी आयु 90 वर्ष हो चुकी है उन्होंने योग साधना करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि जो ज्ञान विश्व के सभी धर्म ग्रन्थों में प्रकाशित है वही ज्ञान मानव के अज्ञान अन्धकार को दूर करके उसे मोक्ष दिला सकता है। मैं पूरे विश्व समाज को इस ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध करा सकता हूँ। चारों युगों में किसी ने भी अपने ग्रन्थों में मोक्ष के बारे में कुछ नहीं लिखा है। मैं स्पष्ट रूप से लिख रहा हूँ कि मैंने 60 वर्षों तक योग करके प्रत्यक्ष रूप से मोक्ष धाम को प्राप्त किया है। इस ज्ञान के अलावा संसार की कोई भी शिक्षा, कर्मकाण्ड एवं बाहरी पूजा पाठ मानव को मोक्ष का मार्ग नहीं दिखा सकते हैं। आज का युवा वर्ग दिशा हीन होकर विपरीत दिशा में दौड़ रहा है जिस वज़ह से उसके अन्दर अशान्ति एवं तनाव उत्पन्न हो रहे हैं। आगे आने वाली पीढ़ी को भी सच्चा मार्ग नहीं सूझ रहा है। ऐसी स्थिति में तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी ने अध्यात्म ज्ञान के बल पर सारे विश्व के मानव को मोह निद्रा से जगाने के लिए "चेतन योग मोक्षधाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली में रविवार के दिन सत्संग के माध्यम से एक जग–जागरण अभियान प्रारम्भ किया है जिसमें आने वाले श्रद्धालु जिज्ञासुओं को इस ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराया जाता है। अनेक जिज्ञासु इस ज्ञान से अपने जीवन को सफल बना रहे हैं। यह ज्ञान परमात्मा ने सभी मानवों के अन्दर गुप्त रूप में रखा है। इसे सच्चे सन्त के माध्यम से उजागर किया जा सकता है। महात्मा जी ने अपनी योग साधना के अनुभव के आधार पर दस अध्यात्म ग्रन्थों की रचना की है तथा अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को उजागर कर मानव में अध्यात्म ज्ञान के प्रति नई जागृति पैदा की है। उन्होंने अपने जीवन में यह अनुभव किया है कि अज्ञान के कारण ही मानव को सही दिशा में जाने का मार्ग नहीं सूझता है जैसे रात्रि के अन्धेरे में बिना रोशनी के गाड़ी चलाने पर ड्राईवर गाड़ी एवं स्वयं को भी क्षति ग्रस्त कर लेता है वैसे ही अज्ञान अन्धकार से भटका मानव जन्म–मृत्यु रूपी दुर्घटनाओं को झेलता रहता है, इस प्रकार से अज्ञान ही महादुख है तथा जीवन में होने वाली दुर्घटनाओं से बचने का एक मात्र उपाय अध्यात्म ज्ञान है। यह ज्ञान वेद, उपनिषद् गीता, रामायण, बाईबल, कुरान व

गुरू ग्रन्थ आदि सभी धर्मग्रन्थों में प्रमाणित है। परमात्मा का ज्ञान सभी मानवों के अन्दर गुप्त रूप से छिपा है उसे प्रकट करने के लिए सच्चे सन्त का सत्संग श्रवण करने की आवश्यकता होती है। परमात्मा निष्काम है इसलिए उसका ज्ञान भी निष्काम है। जब इस संसार में मानव का जन्म होता है तब वह सकाम कर्मों वाला ही होता है। सकाम कर्मों का पर्दा उसके जीवन को उसी प्रकार ढ़के रहता है, जैसे सूर्य को बादल ढक देता है। जब तक मानव तत्वदर्शी सन्त की शरण में जाकर निष्काम परमात्मा के ज्ञान को प्राप्त नहीं करता है तब तक वह सकाम–निष्काम के भेद को भी नहीं समझ पाता है। निष्काम परमात्मा का ज्ञान होने पर वह परमात्मा से जुड़कर सुमरन साधन करता है। तो उसके अन्दर निस्वार्थ प्रेम प्रकट होता है। निष्काम कर्म का ज्ञान ही मानव की आन्तरिक भावनाओं को बदलने में समर्थ है, इसी से मानव में सच्ची शान्ति स्थापित होती है। इस ज्ञान का साधन करने से सभी प्रकार के क्लेश दूर हो जाते हैं इसी ज्ञान से ही मानव मोक्ष पद को प्राप्त होता है। मोक्ष क्या है? साधन क्या है? इसे जानने के इच्छुक व्यक्ति रविवार के दिन 3 बजे सत्संग श्रवण करें और जिज्ञासु बनकर इस ज्ञान का प्रत्यक्ष अनुभव करें।

भजन

ज्ञान का झण्डा योग साधन में, लहर–लहर लहराता है।
साधन करके सोये जीवन में, एक नयी क्रांति लाता है।।
सुमरन साधन मेरे जीवन में, पवित्र विवेक जगाता है।
गुरू अविनाशी का दर्शन मेरे, मन का भरम मिटाता है।।
जीवन की नगरी के अन्दर, ब्रह्म उजाला होता है।
रूहानी रूहों का दृश्य अनोखा, रोज अनुभव में आता है।।
निष्काम ज्ञान की प्रेम धारा से, निस्वार्थ प्रेम जगाता है।
सारे विश्व के मानव में, ज्ञान की ज्योति जगाता है।।
चेतन योगी विश्व मानव को, सच्ची राह दिखाता है।
जन्म–मरण का रोग मिटाकर, जीवन मुक्त बनाता है।।

कर्मों की गति बड़ी गहन है इसे अध्यात्म ज्ञान से ही समझा जा सकता है

आज मैं सभी प्रेमी पाठकों को कर्मों के विषय में जानकारी दे रहा हूँ वैसे तो कर्म कई प्रकार के होते हैं परन्तु संक्षेप में हम इन कर्मों को दो भागों में विभाजित करते हैं (1) सकाम कर्म (2) निष्काम कर्म। सकाम कर्म वे सभी शुभ–अशुभ कर्म होते हैं जिन्हें संसारी कामनाओं को पूरी करने के निमित्त किया जाता है ये सभी शुभ एवं अशुभ कर्म मानव को सुख–दुख के बन्धन में बांधे रखते हैं तथा निष्काम कर्म वे होते हैं जो परमात्मा के निमित्त किये जाते हैं ये मानव को बन्धन से छुड़ाकर उसे स्वतन्त्र बनाते हैं वे मानव को निष्पाप एवं निष्काम बनाते हैं सन्तों के द्वारा एवं शास्त्रों में 84 लाख योनियाँ बताई गयी हैं। इन सभी योनियों में मनुष्य योनि ही कर्म प्रधान योनि है अन्य सभी भोग योनियां हैं। जीव उन कर्मों के अनुसार ही उनके फलों को भोगता है और कर्मों के अनुसार ही विभिन्न योनियों में भ्रमण करता है इसीलिए कहा गया है कि

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा।।

मनुष्य जन्म में आकर भी जिन मानवों को कर्मों की सही जानकारी नहीं मिली। वे मनुष्य पशुओं के समान है क्योंकि पशुओं को भी यह मालूम नहीं होता है कि हमारा कर्म क्या है? वे केवल पूर्व में किये गये कर्मों के फलों को ही भोगते हैं परन्तु अध्यात्मज्ञान के द्वारा सकाम कर्मों के बन्धन से छूट सकता है। जब मानव को तत्वदर्शी सन्त मिल जाते हैं तो वे मानव को ज्ञान देकर उसकी भीतरी दृष्टि खोल देते हैं जिससे वह ब्रह्म दर्शन करता है ब्रह्मदर्शन से उसका जीवन निष्काम बन जाता है। जब तक मानव को अध्यात्म ज्ञान नहीं मिलता तब तक उसका जीवन सकाम ही रहता है सकाम जीवन में सभी कर्म बन्धन में बाँधने वाले ही होते हैं परन्तु ज्ञान मिलते ही वे सभी निष्काम अर्थात् बन्धन को काटने वाले हो जाते हैं आज ही ज्ञान हुआ और आज ही कर्म बदल गये। ज्ञान मिलने पर सकाम कर्मों पर ब्रेक लग जाता है। सन्त समागम सभी तीर्थों में श्रेष्ठ बताया गया है बाहरी तीर्थों में शरीरी स्नान होता है उसमें मन का मैल नहीं धुलता है सन्त समागम से अन्दर ब्रह्म स्नान होता है जिससे मानव अन्दर से पवित्र बनता है पवित्र होने पर उसे गुरू परमात्मा के दर्शन होते हैं इसीलिए कहा गया है कि–

सन्त समागम तीर्थ राजा।
गुरू मिलन का यही दरवाजा।।

ब्रह्म स्नान करने से साधक के अन्दर कई जन्मों के शुभ–अशुभ कर्मों का मैला धुल जाता है। मनुष्य योनि में ही मानव कर्म बन्धन को काटकर जीवन को निष्पाप बना सकता है। कर्म बन्धन से छूटकर ही मानव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। हमारे स्वर में परमात्मा का शब्द है जब हम शब्द में सुरति जोड़कर सुमरन करते हैं तो हमारे अन्दर ज्ञान अग्नि की चिनगारियाँ प्रकट होने लगती हैं जिसमें सभी शुभ–अशुभ कर्म संस्कार जलकर नष्ट हो जाते हैं और अन्दर से पवित्र हो जाते हैं। जब साधक लगातार कई वर्षों तक योग साधन करता है तो उसके अन्दर योग हवा भर जाती है

जो प्रकृति की दूषित हवा को बाहर निकाल देती है। योगी में योग अग्नि का प्रभाव भी बढ़ जाता है जिसमें जन्म–जन्मान्तरों के सभी अपराध जल कर समाप्त हो जाते हैं। जब योगी का जीवन परम पवित्र बन जाता है तब उसके अन्दर ब्रह्म का प्रकाश पूरी तरह से भर जाता है उसके अन्दर सत्संग के उद्‌गार निकलने लगते हैं सत्संग से प्रभावित लोगों के अन्दर सन्त अविनाशी ज्ञान को देकर उनके अन्दर भी लाईट जला देते हैं जिससे लोगों का अन्धकारमय जीवन प्रकाशमय हो जाता है। परमात्मा ने अध्यात्म ज्ञान बीजरूप में सभी मानवों के अन्दर रखा है। सन्त साधन के माध्यम से उस ज्ञान के बीज को मानव जीवन में अंकुरित करते हैं। इसमें सत्संग एवं सेवा से वृद्धि होती है। परमात्मा का शब्द सभी के स्वर में छिपा है इसलिए उसका सुमरन हर श्वाँस में होता है। जो सुमरन की विधि को अच्छी प्रकार जान लेता है उसके आन्तरिक कपाट खुल जाते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि–

श्वाँस–श्वाँस सुमरन करो वृथा श्वाँस न खोय।
न जाने इस श्वाँस का आवन होय न होय।।
श्वाँस सफल सो जानिये जो सुमरन में जाय।
और श्वाँस यों ही गये, कर–कर बहुत उपाय।।

परमात्मा के शब्द का सुमरन करने से सभी अपराध एवं बन्धन में बाँधने वाले सभी कर्म संस्कार समाप्त हो जाते हैं जिससे जीवन आनन्दमय हो जाता है। जब सकाम स्वर निष्काम में मिल जाता है तब मानव को मोक्ष मिल जाता है। मोक्ष प्रदान करने वाला यह अध्यात्म ज्ञान आज के युग में "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली में तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी द्वारा दिया जा रहा है। जिससे सकामी जीवन को निष्कामी बनाया जा सकता है और परमात्मा की परम शक्ति का अनुभव किया जा सकता है।

भजन

मानुष जीवन सफल बनाले, करके गुरू की निष्काम भक्ति।
परमार्थ की सेवा करले, मिल जाये गुरू की परम शक्ति।।
शुभ कर्मों की शुभ गति, तो अशुभ कर्मों की अशुभ गति।
सकाम कर्म बन्धन में बाँधे जीव की होवे अधोगति।।
शुभ कर्मों के सुख भोगों से मन में बढ़ती आसक्ति।
अशुभ कर्मों के काम क्रोध से, जीवन की हो जाये क्षति।।
साधन करके प्रकट करले, जीवन की निज सम्पत्ति।
आवागमन का चक्कर भारी, कर्मों की बड़ी गहन गति।।
निष्काम कर्म करने से बन्दे, हो जावे जीवन मुक्ति।
चेतन वाणी सुनो रे प्राणी, सेवक पा जायें परम गति।।

परमात्मा की आत्माओं को परमात्मा का ज्ञान निशुल्क मिलता है।

तत्वदर्शी सन्त परमात्मा के ज्ञान का सन्देश लेकर समाज में आते हैं वे सत्संग के माध्यम से परमात्मा के ज्ञान की चर्चा समाज को सुनाते हैं जिससे मानवों के अन्दर गुरू ज्ञान को प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत होती है। जिज्ञासु की प्रबल इच्छा एवं श्रद्धा को देखकर तत्वदर्शी सन्त उसे अध्यात्म ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराते हैं ज्ञान के समय जीवात्मा को ब्रह्म प्रकाश दिखायी देता है जिससे उसके अन्दर का अज्ञान अन्धकार मिट जाता है प्रातः ब्रह्म मुर्हुत में ज्ञान होने से जिज्ञासु के अन्दर खुशी की लहर दौड़ जाती है क्योंकि इस समय उसका ज्ञान का जन्म होता है। यह ज्ञान परमात्मा की आत्माओं को परमात्मा की ओर से निशुल्क मिलता है क्योंकि पिता एवं पुत्र के बीच सौदे बाजी नहीं होती है। इस संसार में अमीर–गरीब सभी प्रकार के लोग रहते हैं। वे सभी रूहानी गुरू की अंशी आत्मारूपी "रूह" है इसलिए सच्चे सन्त का यह प्रयास होता है कि कोई भी आत्मा गुरू ज्ञान से वंचित न रह जाये। ज्ञान प्राप्त करने के बाद गुरु–दरबार में सन्त की आज्ञा का पालन करना चाहिए, सभी प्रेमियों को सन्त का सत्संग श्रद्धापूर्वक सुनना चाहिए तथा नित्य प्रति साधन भी करना चाहिए सच्चे सन्त के सत्संग में जीवात्मा के उद्धार के लिए बहुत जानकारी मिलती है। यह ज्ञान अध्यात्म विद्या है जो मावन को मुक्ति दिलाने वाली विद्या है इसलिए अध्यात्म विद्या के विद्यार्थी को गुरू की आज्ञा का पाल करते हुए श्रद्धापूर्वक सत्संग, सेवा एवं साधन निरन्तर करना चाहिए। भौतिक शिक्षा केवल मन बुद्धि तक सीमित होती है। इसके द्वारा केवल सरकारी नौकरी एवं ऊँचे संसारी पदों को प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु अध्यात्म विद्या मन बुद्धि से परे की विद्या है जिसके द्वारा जीवन के परम पद मोक्ष को प्राप्त किया जाता है संसारी विद्या पढ़ने वाले को अपना भी कोई ज्ञान नहीं होता है परन्तु अध्यात्म विद्या का विद्यार्थी अपनी आत्मा को भी जानता है और परमात्मा को भी जानता है उसकी ज्ञान दृष्टि खुली रहती है वे भीतरी आँख से परमात्मा की सरकार को देखते हैं और बाहरी आँख से संसार को भी देखते हैं वे संसार में रहते हुए खाने पीने का प्रबन्ध भी करते हैं तथा परमात्मा का सुमरन साधन एवं सेवा भी करते हैं। भौतक विद्या पढ़ने वाले व्यक्ति को यह नहीं भूलना चाहिए कि वह भी परमात्मा से मिलने के लिए ही मनुष्य योनि में आया है अतः उसे तत्वदर्शी सन्त से निष्काम ज्ञान प्राप्त करके सकाम कर्मों के बन्धन से मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि निष्काम कर्म का साधन ही जीव को मुक्त बना सकता है। संसार की समस्त बाहरी पूजाएँ सकामी मन को निष्कामी नहीं बना सकती हैं। केवल एक परमपिता परमात्मा ही निष्काम है उसका ध्यान करने से ही पतित पावन होते हैं और उसका ज्ञान होने पर ही अज्ञानता समाप्त होती है। अतः मानव को यथाशीघ्र तत्वदर्शी सन्त की शरण में जाकर परमात्मा के निशुल्क ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए।

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन दिनांक 01.09.2019 दिन रविवार को "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली में तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया। इसमें दिल्ली एवं अन्य प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से सक्रिय प्रेमी सम्मिलित हुए। सत्संग में महात्मा जी ने प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए समझाया कि मानव का जीवन अध्यात्म ज्ञान के बिना सफल नहीं हो सकता है। अध्यात्म ज्ञान से मानव को अपने स्वर में छिपे परमात्मा के शब्द की जानकारी मिलती है जब साधक स्वर में छिपे शब्द में सुरति जोड़कर सुमरन करता है तो उसके अन्दर परमात्मा का प्रकाश प्रकट हो जाता है जिससे साधक के अन्दर फैला मोह अन्धकार दूर हो जाता है लगातार योग साधन करने से ज्ञान अग्नि की चिनगारियाँ प्रकट होने लगती हैं। जिससे साधक के आन्तरिक विकार जलने लगते हैं वह अन्दर से पवित्र हो जाता है। पवित्र होने पर वह अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है। उसका मानव जीवन सफल हो जाता है। अध्यात्म ज्ञान मानव की अचल सम्पत्ति है। इसे तत्वदर्शी सन्त के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। प्रेमियों ने भी अपने अनुभव प्रकट किये, महिला प्रेमियों ने गुरू भक्ति के भजन सुनाये, आरती व प्रसाद वितरण के बाद सत्संग की समाप्ति हुई।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: मैं "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका का नियमित पाठक हूँ, इस पत्रिका में दिये गये महात्मा जी के अध्यात्म उद्‌गार जीवन में एक नयी क्रान्ति का संचार करते हैं। इन्हें पढ़कर आत्मिक विकास करने में सहायता मिलती है।

— डा॰ रामनिवास झिंझाना (शामली)

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका प्रेमी साधकों के लिए अमृत वर्षा का कार्य करती है। जिसे पढ़कर साधकों में खुशहाली छा जाती है। साधक के आन्तरिक क्लेश एवं मुर्झाहट समाप्त हो जाती है।

— राजपाल सिंह जसौला (मु॰ नगर)

3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका प्रकाशित भजन महात्मा जी के आन्तरिक अनुभव पर आधारित है इनसे प्रेरित होकर साधना का अभ्यास करने वाले साधक भी अपने अन्दर अलौकिक अनुभव कर सकते हैं।

— कंवरपाल उखलीना (मेरठ)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका अध्यात्म जगत में प्रवेश कराने वाली सर्वोत्तम पत्रिका है इसका अध्ययन करने से अधम जीव भी ज्ञान के प्रति आकर्षित हो सकता है।

— श्रीमती राजबाला
विजय विहार (दिल्ली)

आवश्यक सूचना

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था के समस्त प्रेमियों को सूचित किया जाता है कि संस्था द्वारा अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन "चेतन योग मोक्ष धाम" में दिनांक 27.09.2019 से 29.09.2019 तक किया जायेगा अधिक से अधिक प्रेमी शिविर में सम्मिलित होकर जीवन को सफल बनाये।

आज्ञा से
तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी

G-3/DL(N)/202/2019-21

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन दिनांक 01.09.2019 दिन रविवार को "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11,में तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया। इसमें दिल्ली तथा अन्य प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से सक्रिय प्रेमी सम्मिलित हुए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं महात्मा परम चेतनानन्द, चेतन योग आश्रम, सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी
मुद्रक : टैन प्रिन्ट्स इन्डिया प्रा. लि., रोहद, हरियाण